भारतीय स्टेट बैंक के विलय का वित्तीय विश्लेषण

* डॉ सुरेन्द्र यादव

सार

भारतीय स्टेट बैंक के इतिहास में एक अप्रैल 2017 का दिन एक नये युग की शुरूआत का दिन था। इस दिन भारतीय स्टेट बैंक के पॉच सहायक बैंकों को भारतीय स्टेट बैंक में विलीन कर दिया गया। परन्तु इस विलीनिकरण की प्रक्रिया का भारतीय स्टेट बैंक की वित्तीय स्थिति पर नकारात्मक प्रभाव पड़ा इसी का परिणाम था की भारतीय स्टेट बैंक को 2017–18, 2018–19 के दो निरन्तर वर्ष में भारी हानि उठानी पड़ी। ऐसी स्थिति में बैंक दो वर्षों से अपने अंशधारकों के लिए लाभॉश की व्यवस्था भी नहीं कर पा रहा है। शोध पत्र में बैंक की इसी वित्तीय स्थिति को वित्तीय विश्लेषण की तकनीकों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है।

परिचय

भारतीय स्टेट बैंक अपने प्रारम्भ से ही अनेक विलयों का साक्षी रहा है। इसका स्वयं का अस्तित्व विलयन की प्रक्रिया का परिणाम था। भारतीय स्टेट बैंक की जड़े 2 जून 1806 में स्थापित बैंक ऑफ कलकत्ता से प्रारम्भ होती है। कालान्तर में 27 जनवरी 1921 को ईम्पिरियल बैंक ऑफ इण्डिया की स्थापना बैंक ऑफ कलकत्ता, बैंक ऑफ बोम्बे, बैंक ऑफ मद्रास के समामेलन से हुई। स्वतन्त्रता पश्चात यही ईम्पिरियल बैंक ऑफ इण्डिया 1 जुलाई 1955 को भारतीय स्टेट बैंक के रूप में हमारे समुख आता है। वर्ष 1959 में भारत सरकार भारतीय स्टेट बैंक (सहायक) अधिनियम लेकर

आयी जिसके द्वारा 8 रियासती बैंकों को भारतीय स्टेट बैंक का सहायक बैंक बनाया गया। 1969 में बैंक ऑफ बिहार का, 1970 में नेशनल बैंक ऑफ लाहौर का, 1975 में कृष्णराम बलदेव बैंक का, 1985 में बैंक ऑफ कोच्चि का, 2008 में स्टेट बैंक ऑफ सौराष्ट्र का, 2010 में स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर का विलय हुआ। सबसे महत्वपूर्ण विलय 2017 का विलय था जब भारतीय स्टेट बैंक के शेष बचे पॉचों सहायक बैंक (स्टेट बैंक ऑफ बिकानेर एण्ड जयपुर, स्टेट बैंक ऑफ मैसूर, स्टेट बैंक ऑफ हैदराबाद, स्टेट बैंक ऑफ पटियाला, स्टेट बैंक ऑफ ट्रावनकोर) भारतीय स्टेट बैंक में विलीन कर दिये गये।

समान्यतः 1991 में अपनाई गयी उदारीकृत नवीन आर्थिक नीति के उपरान्त एक समान्य प्रवृती देखने को मिलती है अब व्यवसायिक संस्थाऍ अपने वित्तीय सुद्दडीकरण तथा पुॅजी पुर्नसंरचना के लिए विलय तथा समामेलन की प्रक्रिया को एक उपकरण के रूप में प्रयोग में लाने लगी थी परन्तु भारतीय स्टेट बैंक के संदर्भ में ये परिस्थितियॉ कुछ भिन्न थी। भारत सरकार का प्राथमिक उद्देश्य ऐसे बैंकिंग संगठन की स्थापना करना था जो वैश्विक स्तर के बैंकिंग संस्थाओं के समकक्ष बन सके। इसी उद्देश्य से 2008, 2010, तथा 2017 में भारतीय स्टेट बैंक के सात सहायक बैंकों का उस में विलय कर दिया गया।

साहित्य समिक्षा

भारतीय स्टेट बैंक के विलय का उसकी वित्तीय स्थिती पर पड़े प्रभाव का अध्ययन करने के लिए पूर्व में प्रकाशित हुए शोधपत्रों का अध्ययन एवं समिक्षा की गयी इन शोध पत्रों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

D Nandy, MK Baidya - Efficiency Study on Proposed Merger Plan of State Bank of India (SBI) and its Subsidiaries: A DEA Perspective, ने बैकों में हो रहे अभूतपूर्व परिवर्तनों की ओर

ध्यान दिलाने का प्रयास किया है। साथ ही उन्होने वैश्विक स्तर पर हो रहे बैकों के विलयन एवं एकिकरण की ओर ध्यान केन्द्रित किया है।

JR Kotnal, ने The economic impact of merger and acquisition on profitability of SBI में बैंकों के विलिनिकरण के उद्देश्यों पर प्रकाश ड़ालने का प्रयास किया है। विलिनिकरण के पूर्व एवं पश्चात के प्रदर्शन के विश्लेषण का प्रयास भी किया गया है।

R Pate, ने Pre-Merger and Post-Merger Financial & Stock Return Analysis: A Study with reference to selected Indian Banks में विलय प्रक्रिया के साथ साथ अंशों के बाजार मुल्य पर पड़े प्रभाव का विश्लेषण भी किया गया है।

RP Sinha, ने अपने शोधपत्र Potential Gains from Merger: A Study on SBI and Its Associates में बैंकिंग ढॉचे एवं वैश्विक संदर्भ में भारतीय बैंकों की क्षमताओं का प्रभावी विश्लेष्ण किया है।

V Geete ने अपने शोधपत्र A Study of Impact of Merger of State Bank of India with its Associate Bank and Bankers View Towards Merger. में स्टेट बैंक ऑफ इन्दौर के विशेष संदर्भ में स्थिति चिट्ठा और आय व्यय विवरण का विश्लेषण करने का प्रयास किया है।

अध्ययन का महत्व

भारतीय स्टेट बैंक भारत सरकार और भारतीय रिजर्व बैंक दोनों के लिए ही आर्थिक विषयों को आघार स्तर पर क्रियान्वित करने वाली इकाई रही है। इसी कारण भारतीय स्टेट बैंक की वित्तीय स्थिती पर पड़े वाला प्रत्येक प्रतिकूल प्रभाव सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था को प्रभावित करने में सक्षम है। ऐसी सम्भावना है की ऐसा प्रत्येक प्रतिकूल प्रभाव भारतीय बैंकिंग ढॉचे में बिखराव की

स्थिति को उत्पन्न कर देगा जो अन्ततः अर्थव्यवस्था को धराशाही कर देगा। अतः भारतीय स्टेट बैंक की विलय प्रक्रिया का उसकी वित्तीय स्थिति पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना नितान्त अपरिहार्य हो जाता है।

वहीं दूसरी ओर भारतीय स्टेट बैंक की विलय प्रक्रिया के परिणाम स्वरूप यदि यह विश्व के शिर्ष बैंकिंग संस्थाओं में स्थान बना पाता है तो यह सम्पूर्ण भारतीय अर्थव्यवस्था को सकारात्मक दिशा में गतिशीलता प्रदान करने वाला होगा। अतः यह अध्ययन अपरिहार्य हो जाता है।

अध्ययन के उद्देश्य

अध्ययन के उद्देश्य निम्नानुसार हैं –

O1 भारतीय स्टेट बैंक की परिचालन कुशलता का मुल्यॉकन करना।

O2 विलय का लाभदायकता पर प्रभाव का मुल्यॉकन करना।

O3 पूॅजी संरचनाा में हुए परिवर्तन का मुल्यॉकन करना।

O4 भारतीय स्टेट बैंक के विलय का अंशधारकों पर पड़े प्रभाव का मुल्यॉकन करना।

शोध का रीतिविधान

समंक स्रोत – अध्ययन के लिए आवश्यक सभी समंक द्वितीयक स्रोतों से एकत्र किये गये हैं। बड़े आश्चर्यजनक रूप से भारतीय निगमीय इतिहास में प्रथम बार भारतीय स्टेट बैंक के वार्षिक प्रतिवेदन को सभी पब्लिक डोमेन से हटा लिया गया है जिससे शोध करते समय विश्वश्नीय समंक संकलन एक चुनौती पूर्ण कार्य बन गया था।

अध्ययन अवधि – शोध कार्य के लिए 2014–15 से 2018–19 तक के पॉच वित्तीय वर्षों को लिया

गया है।

विश्लेषणात्मक उपकरण – शोध कार्य के लिए मुख्य रूप से अनुपात विश्लेषण का सहारा लिया गया है। अनुपात विश्लेषण के अन्तर्गत पूँजी संरचना अनुपात, लाभदायकता अनुपात, कार्यशीलता अनुपात और प्रति अंश अर्जन अनुपात प्रयोग में लिए गये हैं साथ ही परिचालन उत्तोलक, वित्तीय उत्तोलक, और संयुक्त उत्तोलक का प्रयोग भी किया गया है

समंक विश्लेषण

$$\text{Net Profit Margin Ratio} = \frac{\text{Net Profit}}{\text{Net Sales}} \text{ X } 100$$

Net Profit Margin Ratio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.35	-2.96	5.97	6.06	8.59

Net Profit Margin Ratio से स्पष्ट होता है की भारतीय स्टेट बैंक द्वारा प्रदान की जा रही सेवाओं मुनाफा निरन्तर घटता चला जा रहा है वर्ष 2017–18 में तो बैंक द्वारा अपनी सेवाएँ हानि पर प्रदान की जा रही थी।

$$\text{Return on Net Worth} = \frac{\text{Net Profit}}{\text{Net Worth}} \text{ X } 100$$

Return on Net Worth					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.43	-3.37	6.69	6.89	10.20

निवेश की गयी पुॅजी की तुलना में लाभ की मात्रा निरन्तर कम होते हुए वर्ष 2017–18 में तो यह ऋणात्मक हो जाती है, जिसमें अगले वर्ष मामुली सुधार दिखई देता है।

$$\text{Return on Shareholder's Investment} = \frac{\text{Net Profit after Tax}}{\text{Shareholder's Fund}} \times 100$$

Return on Shareholder's Investment					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	-0.35	-3.37	6.69	6.89	10.20

किसी भी संस्थान के लिए उसके अंशधारक अत्यन्त महत्तवपूर्ण होते हैं। उन्हें प्राप्त होने वाला प्रतिफल संस्थान के बाजार मुल्य में प्रतिबिम्बित होता है। भारतीय स्टेट बैंक के अंशधारकों को विलय की प्रक्रिया के नकारपत्मक प्रभाव झेलने पड़े हैं। अंशधारकों को प्राप्त होने वाला प्रतिफल विलय की प्रक्रिया के उपरान्त ऋणात्मक हो गया है।

$$\text{Return on Total Assets} = \frac{\text{Net Profit after Tax}}{\text{Total Assets}} \times 100$$

Return on Total Assets					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.09	-0.92	0.43	0.23	0.76

बैंक की सम्मपत्ति की तुलना में लाभ की मात्रा निरन्तर कम होते हुए वर्ष 2017–18 में तो यह ऋणात्मक हो जाती है, जिसमें अगले वर्ष मामुली सुधार दिखई देता है। ऐसा प्रतीत होता है की बैंक अपनी सम्मपत्ति का कुशलतम उपयोग करने में पूर्णतः विफल रहा है।

$$\text{Debt EquityRatio} = \frac{\text{Total Debt Fund}}{\text{Total Shareholder's Fund}}$$

Debt EquityRatio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	16.89	15.79	15.08	14.24	13.87

ऋण समता अनुपात से स्पष्ट दिखाई दे रहा है की पिछले पॉच वर्षों में बैंक की ऋण पूॅजी निरन्तर बढ़ती चली जा रही है । यह प्रवृती निश्चित ही बैंक को दीर्घकाल में क्षती पहुॅचाएगी।

$$\text{Proprietory Ratio} = \frac{\text{Proprietory Fund}}{\text{Total Assets}}$$

Proprietory Ratio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.05	0.056	0.058	0.061	0.062

कुल सम्मपत्तियों की तुलना में स्वामियों की पूॅजी की हिस्सेदारी निरन्तर कम हो रही है। ऐसा प्रतीत होता है की बैंक अपने स्वामियों की पूॅजी के हितों की प्रतिरक्षा करने में पूर्णतः विफल रहा है।

$$\text{Solvency Ratio} = \frac{\text{Total Debt}}{\text{Total Assets}}$$

Solvency Ratio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.90	0.89	0.88	0.87	0.87

शेधनशीलता अनुपात से स्पष्ट है की कुल सम्मपत्तियों की तुलना में बैंक के ऋण निरन्तर बढ़ते चले जा रहे हैं। जो अन्ततः देनदारियों की एक नई समस्या को जन्म देगा।

$$\text{Current Ratio} = \frac{\text{Current Assets}}{\text{Current Laibility}}$$

Current Ratio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.09	0.08	0.07	0.07	0.06

चालू अनुपात का आदर्श अनुपात **2:1** होता है परन्तु पिछले पॉच वर्षों में बैंक कभी भी इसके नजदीक भी नहीं पहुॅच पाया है। यह स्थिति बैंक के लिए अल्पकाल में तरलता की समस्या किसी भी समय उत्पन्न कर सकती है। इन पॉच वर्षों में भारतीय स्टेट बैंक के पास इतनी भी तरलता नहीं है की वह अपनी चालू दायित्वों की पूर्ती भी कर सके।

$$\text{Earning Per Share} = \frac{\text{Profit after tax- Preference dividend}}{\text{Number of Equity Share}}$$

Earning Per Share					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0.97	-7.34	13.15	12.82	17.55

प्रति अंश अर्जन लाभदायकता को मुल्यॉकित करने का अत्यन्त महत्वपूर्ण पैमाना है। विलय के पश्चात के वर्षों में इस में तीव्र गिरावट देखने को मिली है। यह इसकी खराब हुई वित्तीय स्थिति को प्रदर्शित करता है।

$$\text{Dividend Per Share} = \frac{\text{Dividend Paid to Equity Shareholders}}{\text{Number of Equity Share}}$$

Dividend Per Share					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	NIL	NIL	2.60	2.60	3.50

विलय के पश्चात बैंक इतनी बत्तर वित्तीय में पहुॅच गया की लगातार दो वर्षों तक वह अपने अंशधारकों को लाभांश भी नहीं दे पाया।

$$\text{Payout Ratio} = \frac{\text{DPS}}{\text{EPS}} \text{ X } 100$$

Payout Ratio					
	2018-19	2017-18	2016-17	2015-16	2014-15
	0	0	19.77	20.28	19.94

Payout Ratio से हमे यह पता चलता है की बैंक द्वारा किये गये प्रति अंश अर्जन में से प्रति अंश लाभांश के रूप में अंशधारकों को कितना लाभांश प्रदान किया गया। भारतीय स्टेट बैंक का अध्ययन करने पर यह पाया गया की विलय के पश्चात लाभांश प्रदान नहीं किया गया जिसके परिणाम स्वरूप Payout Ratio शुन्य रहा।

प्राप्तियॉ

वित्तीय अनुपात एवं उत्तोलक विश्लेषण से प्राप्त निष्कर्षों के आधार पर यह मत स्पष्टतः स्थापित होता है की भारतीय स्टेट बैंक विलय की प्रक्रिया के पश्चात भारी वित्तीय संकट में पहुॅच चुका है। सभी प्रमुख संकेतक ऋणात्मक संकेत दे रहे हैं। वित्तीय संकट की यह शुरूआत वर्ष 2014–15 से ही प्रारम्भ हो जाती है। यह वह समय था जब भारतीय स्टेट बैंक और उसके सहायक बैंकों के

परस्पर विलय की प्रक्रिया के सम्बन्ध में चिन्तन और प्रारम्भिक तैयारियॉ शुरू हो चुकी थी। बैंक के 10 हजार करोड़ से अधिक के लाभ विलय के तुरन्त पश्चात 6 हजार करोड़ से अधिक की हानि में परिवर्तित हो गये। इससे स्पष्ट है की बैंक को मात्र एक वित्तीय वर्ष में 16 हजार करोड़ से अधिक की क्षति उठानी पड़ी है।

परिचालन व्ययों में निरन्तर वृद्धि होती चली जा रही है। 2014–15 में परिचालन व्यय 38677.64 करोड़ रू.के थे वे 2018–19 में बढ़ कर 69687.73 करोड़ रू. हो गये हैं । अतः स्पष्ट है की मात्र पॉच वर्षों में परिचालन व्ययों में 55.50 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो गयी है। भारतीय स्टेट बैंक के लिए परिचालन व्ययों में ऐसी तीव्र बढ़ोत्तरी किसी भी क्षण संकट उत्पन्न कर सकती है।

वर्ष 2016–17 में भारतीय स्टेट बैंक के अंशपत्रों की संख्या 7973504442 थी जो विलय के पश्चात 2017–18 में बढ़कर 8924587534 हो गयी है। वही प्रति अंश अर्जन और प्रति अंश लाभांश प्रतिकूल रूप में प्रभावित हुई है।

भारतीय स्टेट बैंक के विलय के वित्तीय विश्लेषण को वस्तुनिष्ठता तक पहुचाने के लिए Net Profit Margin Ratio, Return on Net Worth, Return on Shareholder's Investment, Return on Total Assets, Debt EquityRatio, Proprietory Ratio, Solvency Ratio, Current Ratio, Earning Per Share, Dividend Per Share, Payout Ratio आदि अनुपातों का प्रयोग किया गया है। सभी अनुपातों में ऋणात्मक परिणाम परिलक्षित होते हैं।

इन सभी के बावजुद एक विरोधाभास भी दिखई देता है वित्तीय संकेतकों के ऋणात्मक संकेत देने के बावजुद भारतीय स्टेट बैंक के अंश पत्रों के बाजार मुल्य में कोई ऋणात्मक परिवर्तन दिखाई नहीं दे रहा है। विलय के समय अंश पत्रों के बाजार मुल्य 294 रू. था जो वर्तमान में 348.95 रू.

का हो गया है। जिसे रेखचित्र के माध्यम से भी समझाजा सकता है।

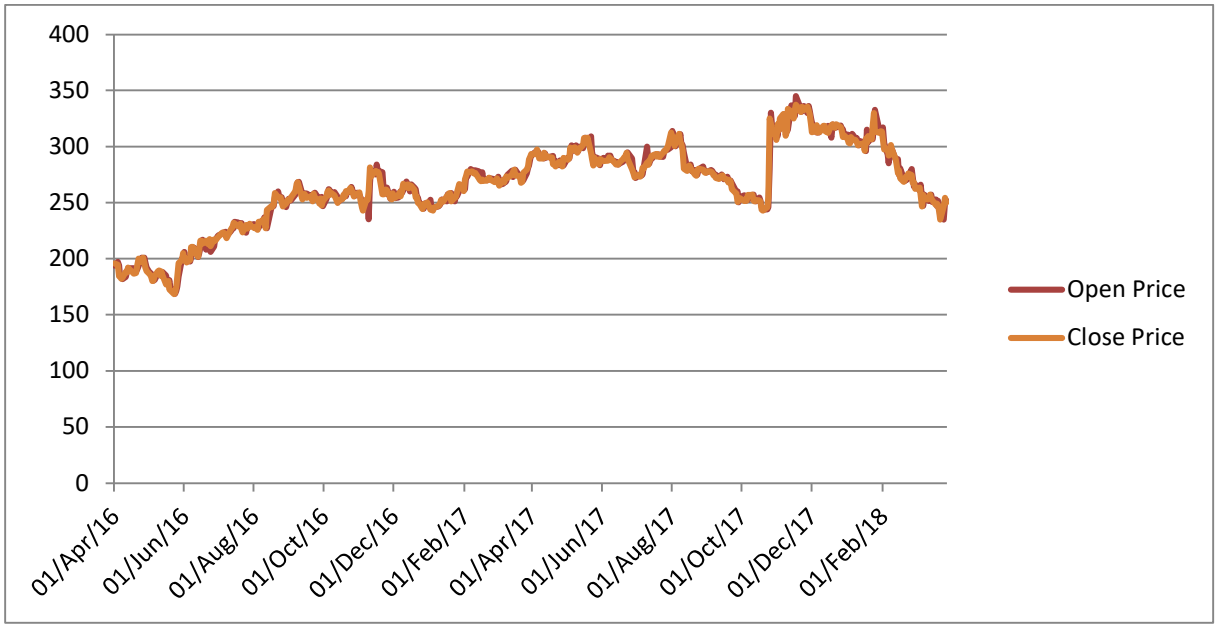

सुझाव

भारतीय स्टेट बैंक को पुनः वित्तीय रूप से सशक्त करने के लिए कठोर वित्तीय अनुशासन की आवश्यकता होगी। बैंक प्रबन्ध तथा सरकार को निम्नलिखित प्रयास किये जाने चाहिए

- पूँजी संरचना का पुनः निर्माण किया जाये।
- परिचालन व्ययों में प्रभावी कमी हेतु प्रयास करना हो।
- साखओं के दोहरेपन का समाधान किया जाये।
- मानव संसाधन प्रबन्ध की कार्य कुशलता का नवीन पद्धती से मुल्यॉकन किया जाये।

- अनुपयोगी स्थायी सम्पत्तियों का त्वरित निस्तारण किया जाये।
- स्थायी सम्पत्तियों का कुशलतम उपयोग किया जाये।
- गैर निषदनकारी परिसम्पत्तियों का त्वरित निस्तारण हो।

निष्कर्ष

भारतीय स्टेट बैंक की विलय प्रक्रिया एक नितान्त दूरदष्टिविहिन निर्णय था। यह निर्णय अत्यन्त जल्दबाजी में लिया गया। तथा ऐसे समय में लिया गया जब बैंक स्वयं गैर निषदनकारी परिसम्पत्तियों के दबाव से गुजर रहा था। अंश पत्रों का बाजार मुल्य एक मात्र ऐसा पैमाना है जो सकारात्मक तस्वीर को दर्शाता है। यह बैंक के प्रति जनसामान्य के विश्वास को प्रदर्शित करता है।

*** सहायक आचार्य (ई. ए. एफ. एम.)**
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

संदर्भ

- Ms.Jaspreet Kaur, A CASE STUDY ON MEGA MERGER OF SBI WITH ITS ASSOCIATE BANKS AND BHARTIYA MAHILA BANK
- Altunbas, Y., & Marques, D. (2008). Mergers and Acquisitions and Bank Performance in Europe: The Role of Strategic Similarities. Journal of Economics & Business, 60, 204 222
- Antony Akhil, K. (2011), "Post-Merger Profitability of Selected Banks in India," International Journal of Research in Commerce, Economics and Management, Vol. 1, No. 8, (December), pp. 133-5.

- Arif M, Can L (2008). Cost and profit efficiency of Chinese banks: A non-parametric analysis. China Econ.Rev. 19(2):260-273.
- Arun Kumar Agariya and Deepali Singh (2012), "CRM Scale Development & Validation In Indian Banking Sector "Journal of Internet Banking and Commerce , vol. 17, no. 1,
- Ashok Kumar Panigrahi , "Capital Structure of Indian Corporate: Changing Trends",Asian Journal Of Management Research ,2010
- Hemindra Hazari, Bad Loans and the Great SBI Merger, The Wire, https://thewire.in/141805/sbiassociate-merger-loss-npas/
- State Bank of India (SBI), http://www.iloveindia.com/finance/bank/nationalised-banks/statebank-of-india.html,
- IANS, SBI merger impact: 47% of associate banks' offices to shut down, http://www.businessstandard.com/article/finance/sbi-merger-impact-47-of-associate-banks-offices-to-shut-down117032100246_1.html
- Devangi Gandhi, ET Bureau, SBI's Merger with associates to hurt its numbers, http://economictimes.indiatimes.com/markets/stocks/news/sbis-merger-with-associates-to-hurtits-numbers/articleshow/58834608.cms
- Govind Bhardwaj, Treasury Head and CEO Secretary at Noble Bank What is the reason behind SBI-associate banks merger? What could be its pros and cons?, https://www.quora.com/What-is-the-reason-behind-SBI-associate-banks-merger-What-could-beits-pros-and-cons